भारत के ''जल पुरूष'': श्री राजेन्द्र सिंह

अंजु चौधरी
रा.ज.सं., रूड़की

बढ़ती जनसंख्या बढ़ते उद्योग ने जल संसाधनों पर अपना दबाव बढ़ाना आरम्भ कर दिया है। जल के प्रदूषित होते संसाधनों का अगर यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मानव को जल के लिए युद्व स्तर पर प्रयास करने होंगे। भारत नदियों का देश कहा जाता है यहां पर गगां–यमुना जैसी सदानीरा नदियां सदियों से भारतवासियों के खेतों की, वन्य जीव–जन्तुओं एवं प्राणी मात्र की प्यास बुझाती आई हैं। नदी केवल जल धारण करने का माध्यम ही नहीं है, अपितु सभ्यता की जानी भी है। इसी के किनारे मानवता का आरम्भ हुआ इसी से उसने अपनी प्यास बुझाई थी एवं इसी के किनारे विकसित होती आई है। इसीलिए जल प्राणी मात्र का जीवन–आधार कहा जाता है। आज प्रदूषण एवं अवैध भूमि माफिया के चलते ये नदियां मलिन तो हो ही रही है। साथ ही साथ अपना आस्तित्व भी खोती जा रही हैं। हिन्डन, काली, यमुना, नर्मदा, गंगा जैसी अनेक नदियों का पानी पीने कहीं–कहीं पर दूर आचमन के योग्य भी नहीं रहा हिन्डन नदी तो एक गन्दा नाला ही बन कर रह गई है। आज समाज की उदासीनता के जहर के कारण इसका पानी इतना विषाक्त हो गया है कि इससे कैंसर जैसी भयानक बीमारी पनप रही है। उद्योगों एवं शहरीकरण के कारण तथा नलकूपों द्वारा सिंचाई करने से भूजल स्तर भी कहीं–कहीं तो 100 फीट तक नीचे गिर गया है। यही भूजल के जलाशय नदियों को अपना जल देकर उन्हें जीवित रखते थे अब वे भी असहाय होते जा रहे हैं। हिमानी नदियां तो जैसे–तैसे अपना जीवन बचा रही हैं परन्तु वर्षा के जल पर आधारित नदियां गर्मी के मौसम तक आते–आते सूखी रेत एवं कूड़े के ढेर में बदल जाती हैं। इस सबका जिम्मेदार प्रत्येक भारतवासी है। आज आवश्यकता है कि लोगों को नदियों से जोड़ने की। उन्हें उसकी समस्या उसके दर्द से अवगत कराने की। इसके लिए केवल जन जागृति ही ऐसा हथियार है जिससे आम व्यक्ति भी इसके प्रति जागरूक होकर स्वयं तो जल के प्रदूषण से बच सकता है एवं अन्य लोगों को भी रोक सकता है। यदी समय रहते हम ना चेते तो नीला ग्रह कही जाने वाली धरती माँ काले ग्रह में बदल जाएगी।

नदियों को पुनजीवित करने हेतु भारत के ''जल पुरूष'' कहे जाने वाले श्री राजेन्द्र सिंह जी एक आशा की किरण लेकर आए है। श्री राजेन्द्र सिंह जी का जन्म 06 अगस्त 1959 को उ0 प्र0 राज्य के बागपत जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था। राजपूत परिवार में जन्मे श्री राजेन्द्र सिंह जी सात भाई–बहनों में सबसे बड़े थे। वर्ष 1974 ऐसा समय था जब इनके जीवन ने एक नया मोड़ लिया। वर्ष 1974 में जब ये हाई स्कूल में थे तब इनके घर पर गाँधी फाउन्डेशन के सदस्य श्री राकेश शर्मा जी का आगमन हुआ। जिन्होंने ग्राम सफाई, ग्राम पुस्तकालय एवं स्थानीय विवाद को सुलझाने हेतु तथा नशा मुक्ति हेतु श्री राजेन्द्र सिंह जी को चुना। ये अपने स्कूल के अंग्रेजी विषय के अध्यापक श्री प्रताप सिंह जी से भी बहुत प्रभावित थे जो कि अपनी कक्षा में छात्रों से समाजिक एवं राजनैतिक मामलों की चर्चा करते थे अपनी शिक्षा पूर्ण कर उन्होंने 1984 में जयपुर में सरकारी नौकरी करना आरम्भ कर दिया। इसी बीच इन्हें श्री जयप्रकाश नरायण द्वारा स्थापित छात्र संगठन युवा संर्घष वाहिनी का नेता चुन लिया गया। इसके बाद इन्होंने राजस्थान राज्य के दौसा जिले के प्रौढ़ शिक्षा स्कूल में पदभार ग्रहण किया तथा जयपुर विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं छात्रों द्वारा चलाए जा रहें तरूण भारत संघ जो कि विश्वविद्यालय परिसर में लगी आग के शिकार लोगों की मदद हेतु चलाया जा रहा था, में शामिल हो गए। तीन वर्ष बाद ये उस सगंठन के सचिव बनाए गए। जब 1984 में पूरे बोर्ड ने संगठन से त्याग पत्र दे दिया तो इन्होंने मानव कल्याण हेतु नौकरी से इस्तीफा देकर एवं अपने पूरे घर का सामान मात्र तेईस हजार रूपये में बेच कर एक बस में बैठ गए। उस बस का अन्तिम पड़ाव थाना गाजी तहसील का एक गाँव किसोरी था। ये जिस दिन वहां पहुँचे उस दिन 02 अक्टूबर, 1985 का दिन था जहाँ से इन्होंने अपने जन कल्याण कार्यक्रम की नींव रखी।

उन दिन उस क्षेत्र के पेय जल के स्रोत सूखते जा रहे थे, किसान पारम्परिक सिंचाई के साधन छोड़कर नल कूपों द्वारा खेती कर रहे थे जिससे जल स्तर गिरने के कारण नदियाँ सूख गई थी जोहड़ सूखे पड़े थे, लोग गाँव छोड़ने पर मजबूर थे। महिलाओं को मीलों दूर से पानी लाना पड़ रहा था। तब एक दिन एक स्थानीय वृद्ध मंगू लाल पटेल ने उन्हें बताया कि शिक्षा से बड़ी समस्या इस क्षेत्र की "जल" है। इन सब परिस्थितियों को देख कर इनका हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने इस गाँव के जल संसाधनों के विकास की ठान ली इन्होंने कुछ युवकों एवं ग्रामवासियों तथा अपने श्रम द्वारा एक जोहड़ तैयार कराया जो कुछ वर्षो से ग्राम वासियों की उदासीनता का शिकार था। मानसून के समय में वह भर गया। जिससे उस क्षेत्र के पेय जल की समस्या का कुछ निदान हुआ उनके इस प्रयास को वन विभाग ने सराहा एवं अपने पार्क प्रबन्धन हेतु सक्रिय भाग लेने हेतु आमंत्रित किया। इस प्रकार उन्होंने लोक कल्याण के कार्य का शुभारम्भ किया।

अरावली पहाडियों की तलहटी में बसे लगभग 1000 ग्राम के ग्रामवासियों के जीवन में जल को उपल्बध कराने मे उनके इस योगदान के कारण श्री राजेन्द्र सिंह को दुनिया ने राजस्थान के "जल पुरूष" की संज्ञा दी। उन्होंने लगभग 8,600 जोहड़ों एवं तालाबों को व्यवस्थित कराकर वर्षा जल का संरक्षण किया उनके इस प्रयास के कारण जहाँ एक ओर उस क्षेत्र में पेय जल की उपलब्धता बढ़ी वहीं दूसरी ओर भूजल स्तर भी बढ़ा। उन्होंने 6500 वर्ग किमी0 के क्षेत्र में स्थित पांच नदियाँ, अरवरी, रूपरेल, सरसा, भगनी एवं जहाजवाली जो सूखी पड़ी थी उन्हें पुनः जीवन दान दिया। उनके इस प्रयास से ही आज इन नदियों में जल की धारा अबाध गति से बह रही है। अरवरी नदी को जीवन दान देने के उपलक्षय में भारत सरकार ने वर्ष 1995 में उन्हें "राष्ट्रीय नदी पुरूस्कार" से सम्मानित किया। लोक कल्याण हेतु वर्ष 2001 में उन्हें रमन मेग्सेस पुरस्कार भी प्रदान किया गया। वर्ष 2005 में उन्हें "जमनालाल" बजाज पुरस्कार से भी नवाजा गया। उनका नदियों को नव जीवन देने का प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए एक दिशा निर्धारित करता है कि कैसे सब के सामूहिक प्रयास द्वारा हम पेय जल एवं सिंचाई जल का प्रबन्धन कर देश को जल के क्षेत्र में आए संकट से उबार सकते हैं। नदियों को पुनर्जीवन देने हेतु वे पिछले तीस वर्षो से पारम्परिक तालाबों एवं जोहड़ों को जीवन दान दे रहे हैं। अरवरी नदी को जीवित करने हेतु उन्होंने उसके पथ में जगह–जगह पर लगभग 375 मृदा के बाँध बनाए एवं वर्षा काल में जल को संग्रहीत किया जिससे लगभग 9 वर्षो की अवधि में वह नदी फिर से जल धारण कर सकी।

उन्होंने जल ही नहीं अपितु वन सम्पदा को संरक्षित करने के उद्देश्य से वन बचाव समिति का सगंठन किया तथा जो वन विगत 12 वर्षो से बंजर पड़े थे वे अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ पुनः हरे–भरे हो उठे। इसी अभियान के तहत उन्होंने वर्ष 1986 से पेड़ बचाव पद यात्रा आरम्भ की। प्रतिवर्ष यह यात्रा मानसून के महीने से आरम्भ होकर 40 दिनों तक चलने के पश्चात रक्षाबंधन को समाप्त होती है जिसमें ग्रामीण पेड़ों को राखी बाधंकर उनके संरक्षण की शपथ लेते हैं। वन्य जीवन को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से उन्हानें एक "जंगल जीवन बचाओ यात्रा" भी निकाली जो भारत के नौ राज्यों राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, एवं दिल्ली क्षेत्र के 21 वनों की उचित औषधीय व्यवस्था हेतु उनका एवं उनकी पूरी टीम का प्रयास है। उन्होंने स्थानीय लोगों को वन्य औषधीय पौधों का लेखा जोखा रखने हेतु भी जन जागृति फैलाई। इन्होंने एक अरावली बचाओ यात्रा आयोजित की इसके तहत हजारों लोगों ने भाग लिया। इसके कारण सरकार को "सिरसका राष्ट्रीय पार्क की परिधि में 470 खदानों से खनन को बन्द करना पड़ा। इस प्रकार इन्होंने पर्यावरण की रक्षा हेतु 1000 खनन कार्यो को बन्द करवाया। पर्यावरण की रक्षा हेतु इनके प्रयासों के कारण वर्ष 1994 में "तरूण भारत संघ" को इन्दिरा गाँधी पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इनके पर्यावरण एवं जल संरक्षण के प्रयासों को विश्व स्तर पर भी सराहा गया। स्वीडन के एक संस्थान के निदेशक श्री. ट्रोनगे होमगर्न ने कहा है कि "यदि हम आज अपने संचित जल की देखभाल नहीं करेंगे तो विश्व में स्वच्छ जल की बढ़ती माँग के चलते कुछ ही दशकों में हम जल

की कमी को तीव्रता से महसूस करेंगे। ऐसे में मिस्टर सिंह ने इस क्षेत्र में एक उम्मीद दिखाई है।'' उनका यह कथन हम भारत वासियों के लिए भी एक उदाहरण है। उन्होंने जल ही नहीं अपितु समाज के उत्थान के लिए भी बहुत से कार्य किए हैं उनमें से महिला सशक्तिकरण, विज्ञान एवं तकनीक के प्रयोग द्वारा मानव उत्थान जैसे अनेक कार्य हैं।

उनका आगामी कार्य 45 गाँवों की दशा सुधारने का है। उन्होंने लूनी नदी को स्वच्छ करने का अभियान भी आरम्भ कर दिया है । सन् 1984 में वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो जल के संरक्षण से पूर्णतः अनभिज्ञ थे परन्तु आज उन्हें ''जल पुरूष'' की उपाधि के अतिरिक्त वर्ष 2015 में हाल ही में स्टॉकहोम की एक संस्था ने ''जल पुरस्कार'' प्रदान किया जो कि ''जल के लिए नोबेल पुरस्कार कहा जाता है'' वे कहते हैं। कि जल की समस्या तब तक नहीं सुलझ सकती जब तक जन–जन इसमें भागीदारी नहीं निभाता। प्रत्येक व्यक्ति को जल का मूल्य समझना होगा तभी आने वाले दिनों में गाँव–गाँव एवं घर–घर में समुचित जल का सपना साकार हो सकेगा एवं भारत की नदियाँ फिर से पतित पावनी बन सकेंगी।

न्याय उस भाषा में होना चाहिए, जिसका एक–एक शब्द उसकी समझ में आता हो, जिसका कि न्याय हो रहा हो।

(पं. मदन मोहन मालवीय)